International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जैन विश्व भारती संस्थान के वर्धमान ग्रंथागार की पांडुलिपि संरक्षण में विशिष्ट भूमिका

लाजवन्ति जैन

शोधार्थी – श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ (राज.)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध का केंद्र बिंदु पुस्तकालय की अवधारणा, उसकी सामाजिक एवं शैक्षिक भूमिका तथा जैन विश्व भारती संस्थान के 'वर्धमान ग्रंथागार' का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। प्राचीन काल से ही पुस्तकालय मानव सभ्यता के ज्ञान–संरक्षण के प्रमुख केंद्र रहे हैं। मनुष्य ने अपने बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अनुभवों को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकालयों की स्थापना की, जिससे भावी पीढ़ियाँ उस ज्ञान से लाभान्वित हो सकें। पुस्तकालय केवल पुस्तकों का संग्रहालय नहीं, बल्कि ज्ञान के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार का सक्रिय माध्यम है। आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक के समावेश ने पुस्तकालय सेवाओं को अधिक व्यापक, सुलभ एवं प्रभावी बना दिया है। आज पुस्तकालय पारंपरिक मुद्रित सामग्री के साथ–साथ ई–पुस्तकें, डिजिटल आर्काइव, ऑनलाइन डेटाबेस एवं मोबाइल ऐप के माध्यम से भी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। शोध में पुस्तकालयों के प्रमुख प्रकार सार्वजनिक, शैक्षिक एवं विशिष्ट का विवेचन किया गया है। सार्वजनिक पुस्तकालय समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर प्रदान करते हैं। शैक्षिक पुस्तकालय विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययन एवं अनुसंधान के केंद्र होते हैं। विशिष्ट पुस्तकालय किसी विशेष विषय या संस्थान के उद्देश्य से स्थापित किए जाते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में वर्धमान ग्रंथागार का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह ग्रंथागार न केवल जैन धर्म के साहित्य का भंडार है, बल्कि एक बहुआयामी ज्ञान–केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। इसकी स्थापना आचार्य आचार्य श्री तुलसी की दूरदर्शी सोच का परिणाम है। यह ग्रंथागार जैन धर्म, दर्शन, प्राकृत, संस्कृत, भारतीय संस्कृति तथा अन्य धार्मिक एवं दार्शनिक विषयों के विशाल संग्रह से समृद्ध है।

ग्रंथागार में लगभग 76,000 से अधिक पुस्तकों के साथ हजारों पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं। विशेष रूप से 6650 से अधिक पांडुलिपियों का संरक्षण एवं डिजिटलीकरण किया गया है। स्वर्णाक्षरों में लिखित 'कल्पसूत्र' ग्रंथ तथा 24 तीर्थंकरों का वर्णन करने वाला 40 फुट लंबा 'पट्ट दर्शन' पांडुलिपि इसकी विशिष्ट धरोहर हैं। यहाँ पांडुलिपि संरक्षण केंद्र स्थापित है, जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन द्वारा प्रायोजित है। यह राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ग्रंथागार की एक अन्य विशेषता इसका आधुनिक तकनीकी उपयोग है। पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर लैब, वाई–फाई सुविधा तथा संस्था के 'सम्बोधि' मोबाइल ऐप के माध्यम से ज्ञान को डिजिटल रूप में भी सुलभ बनाया गया है। इस प्रकार यह ग्रंथागार पारंपरिक ज्ञान–संरक्षण और आधुनिक तकनीकी समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। शोध का प्रमुख उद्देश्य जैन धर्म की ज्ञान–परंपरा, साहित्यिक विकास तथा ग्रंथ संरक्षण की ऐतिहासिक प्रक्रिया का विश्लेषण करना है। साथ ही यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वर्धमान ग्रंथागार न केवल जैन धर्म की आध्यात्मिक धरोहर का संरक्षक है, बल्कि यह शोध, अध्ययन एवं वैचारिक संवाद का सशक्त केंद्र भी है। अतः प्रस्तुत शोध पुस्तकालय विज्ञान एवं जैन दर्शन के मध्य एक सशक्त सेतु स्थापित करने का प्रयास है, जिससे पारंपरिक ज्ञान–सम्पदा को आधुनिक साधनों के माध्यम से सुरक्षित रखते हुए भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सके। इस पुस्तकालय में जैन धर्म के साथ अन्य धर्मो एवं विषयों का तुलनात्मक अध्यन एवं शोधकार्य किया जा सकता है।

संकेताक्षर – जैन धर्म, ग्रंथागार, आगम, ग्रंथ, श्रावक, श्राविकाए, वांग्मय, श्रमणियां, पांडुलिपियां, कल्पसूत्र ,पट्ट दर्शन, बाराबुदूर, संबोधि, संवर्धन, संरक्षण, आध्यात्मिक।

प्रस्तावना –

पुस्तकालय प्राचीन काल से ही हमारे समक्ष एक अमूल्य ज्ञान पुंज के रूप में विद्यमान रहे हैं मनुष्य अपने ज्ञान को आने वाली पीढ़ी के लिए पुस्तकालयों के माध्यम से सुरक्षित और संरक्षित रखता आया है पुस्तकालय शब्द का अर्थ पुस्तक + आलय है यह दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है जिसका अर्थ है पुस्तकों का घर या वह स्थान जहां पर पुस्तके रखी जाती है यूं तो पुस्तक विक्रेता के पास भी पुस्तके उपलब्ध होती है परन्तु उसको पुस्तकालय नहीं कहा जा सकता है क्योंकि पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य उपयोगकर्ता को सेवार्थ व निशुल्कः पुस्तके उपलब्ध कराना होता है आज आधुनिक युग में डिजिटल सेवाएं एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा सेवाओं का और भी विस्तार हो गया है अब तो पुस्तकालय अपनी सेवाएँ ऑनलाइन माध्यम से 24 घंटे उपलब्ध करा रहा हैं पुस्तकालय मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं – सार्वजनिक पुस्तकालय, शैक्षिक पुस्तकालय, विशिष्ठ पुस्तकालय मोटे तौर पर यही तीन प्रकार के पुस्तकालय बताए गए हैं इन सभी पुस्तकालयों में अपनी–अपनी प्रकार व भिन्नता के आधार पर विशेषताएं एवं विभिन्नताएं भी विद्यमान होती है। सार्वजनिक पुस्तकालय को जनता का विश्वविद्यालय की संज्ञा दी गई है, वह साधारण जनता को बिना किसी भेदभाव के जाति, लिंग, धर्म, आर्थिक स्थिति आदि के आधार पर अलग ना करते हुए समानता के साथ सेवाएं उपलब्ध करवाता है वही शैक्षिक पुस्तकालय के तीन प्रकार मौजूद हैं विद्यालय पुस्तकालय, महाविद्यालय पुस्तकालय और विश्वविद्यालय पुस्तकालय यहां भी तीनों ही पुस्तकालय के प्रकारों के आधार पर उपयोगकर्ताओं में वैशिष्टय उपलब्ध होता है शैक्षिक स्तर की भी विभिन्नता पाई जाती है जिसमें स्कूल स्तर पर उपयोगकर्ता स्कूल के विद्यार्थी एवं शिक्षक होते है एवं महाविद्यालय में उपयोगकर्ता विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी हो सकते हैं विश्वविद्यालय में भी शोधार्थी, विद्यार्थी एवं शिक्षकगण आदि उपयोगकर्ता होते हैं विशिष्ट पुस्तकालय हमेशा किसी विशेष क्षेत्र, उद्देश्य या संगठन विशेष क्षेत्र के लिए बनाया जाता है जैसे बैंक, डिफेंस, कोर्ट, संसद आदि वहां के विशिष्ट व्यक्ति अपने कार्य में सुलभता और अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान को बढ़ाने के लिए इन पुस्तकालयों का उपयोग करते हैं परन्तु मैंने अपने शोध कार्य के लिए एक अनुठे पुस्तकालय का चुनाव किया जहाँ पर मुझे पुस्तकालय एवं उपयोगकर्ता दानो का विशिष्ठय द्रष्टगत हुआ।

एस. आर. रंगनाथन ने भी पुस्तकालयों को त्रिर्मूती कहा जहां पर पाठक, पुस्तक, कर्मचारियों का संगम एवं सहयोग की बात कही, सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पुस्तकालय को जनता के विश्वाविद्यालय की संज्ञा दी है, एवं पुस्तकालय को विश्वविद्यालय का ह्रदय भी माना गया है। जैन विश्व भारती संस्थान का ग्रंथागार जिसका नाम "वर्द्यमान ग्रंथागार" है यह पुस्तकालय जैन विश्व भारती संस्थान की गरिमा का एक विशेष कारण है यहां पर विशेषताओं का एक अनूठा संगम अनुभव किया। पुस्तकालय के प्रकार में तो विभिन्नता प्रतीत हुई परन्तु उसके उपयोगकर्ताओं में भी विभिन्नता प्रतीत हुई और इससे प्रभावित हो कर, वर्तमान में अपना शोधकार्य "वर्धमान ग्रंथागार" कि इन्हीं विशेषताओं की ओर आकर्षित होकर आगे बढ़ा रही हूँ। वर्धमान ग्रंथागार अपने आप में त्रिमूर्ति संगम को स्थापित करता है यह ग्रंथालय एक जैन धर्म की धार्मिक धरोहर और ज्ञान को संजोने के लिए बनाया गया यहां सभी विषय के ग्रंथ, साहित्य, दुर्लभ ग्रंथ, धार्मिक ग्रंथ, पांडुलिपियां एवं पट्टचित्र आदि उपलब्ध हैं यह जैन विश्व भारती का प्रमुख और प्रथम भवन भी है यह एक सार्वजनिक पुस्तकालय, शैक्षणिक पुस्तकालय, विशिष्ट पुस्तकालय तीनों ही प्रकार कि भूमिका को निभा रहा है जहां पर उपयोगकर्ता भी सभी प्रकार के हैं जिसमें जैन धर्म के श्रावक–श्राविकाएं, आम निवासी, विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक एवं धार्मिक विशिष्टता के लिए साधु–संत, श्रमण–श्रमणियां तथा विद्वान लोग विदेशों से भी अपने ज्ञान की जिज्ञासा को शांत करने आते हैं, यह पुस्तकालय अपने स्थापना काल से अब तक निरंतर विकास और आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहा है यहां का संग्रह तो अपने आप में ज्ञान का बहुमूल्य विशाल सागर है यहां पर जैन धर्म और अध्यात्म, एवं तेरापंथ का भरपूर साहित्य संग्रहित है।

वर्धमान ग्रंथागार के संदर्भ में पांडुलिपियों का संरक्षण एवं संवर्धन एवं महत्व –

भारतीय ज्ञान–परंपरा में पांडुलिपियाँ बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत की संवाहक रही हैं। जैन धर्म के संदर्भ में इनका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि जैन दर्शन, आगमिक साहित्य, टीकाएँ, भाष्य, चरित्र–ग्रंथ तथा दार्शनिक विवेचन मुख्यतः हस्तलिखित पांडुलिपियों के माध्यम से ही पीढ़ी–दर–पीढ़ी संरक्षित होते आए हैं। इस अमूल्य ज्ञान–धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन में जैन विश्व भारती संस्थान के अंतर्गत स्थित वर्धमान ग्रंथागार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्धमान ग्रंथागार जैन धर्म से संबंधित दुर्लभ हस्तलिखित पांडुलिपियों, प्राचीन ग्रंथों एवं संदर्भ साहित्य का एक समृद्ध भंडार है। यहाँ संरक्षित पांडुलिपियाँ न केवल धार्मिक आस्थाओं को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि वे भारतीय दर्शन, नैतिक मूल्यों, भाषा–विकास, लिपि–परंपरा तथा तत्कालीन सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश को समझने का भी सशक्त माध्यम हैं। इस दृष्टि से वर्धमान ग्रंथागार एक साधारण ग्रंथ–संग्रह नहीं, बल्कि जैन बौद्धिक परंपरा का जीवंत केंद्र है।

पांडुलिपियों का संरक्षण – वर्धमान ग्रंथागार में संरक्षित अधिकांश पांडुलिपियाँ अत्यंत प्राचीन, दुर्लभ एवं संवेदनशील प्रकृति की हैं, जिन पर समय, जलवायु, आर्द्रता, कीट–प्रकोप तथा भौतिक क्षरण का निरंतर प्रभाव पड़ता है। अतः इन पांडुलिपियों का वैज्ञानिक संरक्षण अनिवार्य हो जाता है। ग्रंथागार द्वारा नियंत्रित तापमान एवं आर्द्रता, कीट–नियंत्रण, सुरक्षित भंडारण, मरम्मत एवं पुनर्संरचना जैसी विधियों के माध्यम से इस अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। संरक्षण की यह प्रक्रिया न केवल भौतिक सुरक्षा तक सीमित है, बल्कि ज्ञान–परंपरा की निरंतरता को बनाए रखने का भी माध्यम है।

वर्धमान ग्रंथागार, जैन विश्व भारती संस्थान एक परिचय –

वर्धमान ग्रंथागार, नागौर जिले के लाडनूं शहर में जैन विश्व भारती संस्थान के परिसर में अवस्थित है जैन विश्व भारती की स्थापना आचार्य श्री तुलसी के द्वारा की गई। आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे। उन्होंने सन् 1970 में जैन विश्व भारती की स्थापना की आचार्य श्री तुलसी महान संत व दूरद्रष्टा तथा "अणुव्रत आंदोलन" के प्रवर्तक थे। उनका चिंतन और जीवन दोनों ही मानव कल्याणकारी थे। उनके अथक प्रयासों से जैन विश्व भारती का उद्भव हुआ। आचार्य श्री जैन विश्व भारती के माध्यम से ऐसा मंच से तैयार करना चाहते थे जहां पर जैन दर्शन और तेरापंथ धर्म संघ के मौलिक सिद्धांतों पर नए सिरे से चिंतन और मनन हो सके और लोग तत्वार्थ दर्शन, जैन, वांग्मय में विविध अंगोंउपागों पर सूक्ष्म विश्लेषण विचार विर्मश आदि करें, इसी उद्देश्य को सार्थक करने के लिए सन् 1973 में ग्रंथालय की आधारशिला तैयार हुई और सन् 1975 में इसका उद्घाटन तत्कालीन महामहिम उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती के करकमलो से हुआ। सन् 1991 में जैन विश्व भारती को विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ जब से यह पुस्तकालय विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय के रूप में विख्यात हुआ। निरंतर प्रयासों और विकास से आज यहां पर विभिन्न विषयों से संबंधित 76,000 के लगभग पाठ्य सामग्री संग्रहित है इस पुस्तकालय में विश्वस्तरीय पुस्तकों के साथ प्राचीन भारतीय साहित्य, जैन विद्या, प्राकृत, संस्कृत, धर्म, दर्शन,गणित, ज्योतिष आदि के साथ दुर्लभ ग्रंथ एवं पांडुलिपियों का संग्रह भी मौजूद है यह ग्रंथालय विभिन्न शोधार्थियों, अध्यापकों, स्वाध्याय करने वालों और ज्ञान में रुचि रखने वालों के लिए आकर्षण का केंद्र और जैन साधु–संतो के शिक्षा प्राप्ति का स्त्रोत बना हुआ है इस पुस्तकालय में उच्च सुविधाओं युक्त 120 सीटों वाला अध्ययन कक्ष (रीडिंग हॉल) व रीडिंग गैलरी एवं अलग–अलग विषयों के तीन रीडिंग रूम बने हुए हैं, यहां पर आधुनिक तकनीकी युक्त कंप्यूटर, संचार सुविधाएं, वाई–फाई, सी.सी.टी.वी. कैमरा, स्कैनर, फोटोकॉपी मशीन, कंप्यूटर लैब, तकनीकी विभाग आदि की सेवाएं उपलब्ध है पुस्तकालय प्रबंधन एवं बुक ट्रांजैक्शन हेतु इनफ्लिबनेट का नवनिर्मित वर्जन सॉल 3.0 सोफ्टवेयर का उपयोग किया जा रहा है। यह अपनी संस्थागत रिपोजेटरी बना रहा है।

जैन विश्व भारती संस्थान का अपना एक 'संबोधि' नामक मोबाइल ऐप भी उपलब्ध है। इस ऐप के माध्यम से कोई भी व्यक्ति घर बैठे जैन धर्म एवं तेरापंथ से संबंधित विभिन्न ग्रंथों का अध्ययन कर सकता है। इसमें साधु–साध्वियों, संतों तथा शिक्षकों–श्रावकों द्वारा लिखित पुस्तकों का समावेश किया गया है। यह ऐप जैन धर्म के सिद्धांतों, आचार–विचार

एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस प्रकार 'संबोधि' ऐप डिजिटल माध्यम से जैन साहित्य को जन–सामान्य तक सुलभ कराने का एक सशक्त साधन सिद्ध हो रहा है।

वर्धमान ग्रंथागार के दुर्लभ ग्रंथ एवं विशेषताएं –

प्राचीन एवं दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों के संरक्षण के लिए यहाँ स्थापित 'श्रुत–सन्निधि' कक्ष में संचालित पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र बनाया गया है यह केन्द्र सम्पूर्ण देश में जैन साहित्य के संरक्षण हेतु एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन द्वारा प्रायोजित है। इस केन्द्र में विविध विषयों से संबंधित लगभग 6650 पांडुलिपियाँ सुरक्षित रूप से संरक्षित हैं। जिसमें आसपास के क्षेत्र, घरों, मंदिरों, उपाश्रयो एवं आश्रमों, संतो, पुजारीयो आदि से मिलने वाले दुर्लभ ग्रंथ एवं पांडुलिपियों सुरक्षित व संग्रहित तथा डिजिटलीकरण कीया जा रहा है। जिससे वह उपयोगकर्ताओं को दिखाने के समय खराब ना हो। इसके अतिरिक्त लगभग 545 प्राचीन हस्तलिखित पोथियाँ भी यहाँ उपलब्ध हैं। इन पांडुलिपियों में जैन आगम, दर्शन, साहित्य, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण, मंत्र–तंत्र, आचारशास्त्र, कोष तथा अन्य विषयों से संबंधित बहुमूल्य ग्रंथ सम्मिलित हैं।

ग्रंथालय में विशेष रूप से 1402 आगम पांडुलिपियाँ तथा 486 जैन विद्या एवं दर्शन से संबंधित हस्तलिखित ग्रंथ 501 प्राचीन उपदेश ग्रंथ, 489 कथाएं 458 अन्य दर्शन ग्रंथ, 142 आयुर्वेद ग्रंथ, 160 व्याकरण, 339 ज्योतिष, 83 कोश, 298 मंत्र–तंत्र सम्बंधी ग्रंथ, 90 खण्डो का गांधी वाग्मय, 61 आचार सम्बंधी, 7 खगोल शास्त्र, 7 वैदिक गणित और 1 कामशास्त्र का ग्रंथ आदि यहाँ सुरक्षित हैं। इन ग्रंथों में अधिकांश प्राकृत भाषा में हैं, जबकि कुछ राजस्थानी एवं संस्कृत भाषा में भी उपलब्ध हैं। यहाँ संरक्षित पांडुलिपियों में लगभग 1,77,760 प्राचीन पृष्ठ पूर्णतः डिजिटलीकरण कर सुरक्षित अवस्था में संजोकर रखे गए हैं। संरक्षण की आधुनिक तकनीकों के माध्यम से इन अमूल्य धरोहरों को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने का कार्य किया जा रहा है। केंद्रीय पुस्तकालय पूरे भारत से जैन पांडुलिपियों का डिजिटल संग्रह भी बना रहा है। यह कार्य ग्रंथालय के प्रबंधन ने स्वयं के संग्रह 6000 पांडुलिपियों, राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट–जोधपुर, चित्तौड़गढ़ से पूरा कर लिया है और बीकानेर और उज्जैन में काम चल रहा है। पांडुलिपियों की सीडी का कुल संग्रह 300 है।

श्री कल्पसूत्र – यहा पर स्वर्णाक्षरों में लिखित 'श्री कल्पसूत्र' पांडुलिपि वर्धमान ग्रंथागार की अत्यंत विशिष्ट और दुर्लभ धरोहरों में सम्मिलित है। 'कल्पसूत्र' जैन आगम परंपरा का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें विशेषतः 24 तीर्थंकरों, विशेषकर भगवान महावीर, के जीवन, चातुर्मास, आचार–विधि तथा मुनि–संघ की परंपराओं का वर्णन मिलता है। इस पांडुलिपि की विशेषता इसके स्वर्ण–लेखन में निहित है। इसके अक्षरों को स्वर्ण–स्याही से अंकित किया गया है, जिससे न केवल इसकी सौंदर्यात्मक गरिमा बढ़ती है, बल्कि यह उस काल की ललित–लेखन एवं चित्रांकन परंपरा का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। पांडुलिपि में रंगीन लघु–चित्र, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग तथा अलंकरणीय सीमाएँ इसकी कलात्मक महत्ता को और अधिक समृद्ध करती हैं। ऐसी पांडुलिपियाँ सामान्यतः धार्मिक अनुष्ठानों एवं विशेष पर्वों विशेषकर पर्युषण के अवसर पर पाठ के लिए उपयोग में लाई जाती थीं। संरक्षण की दृष्टि से यह पांडुलिपि अत्यंत संवेदनशील है। स्वर्ण–लेखन, प्राकृतिक रंग एवं प्राचीन कागज ताड़पत्र की संरचना समय के साथ क्षरण के प्रति संवेदनशील होते हैं अतः इसे नियंत्रित ताप–आर्द्रता, एसिड–फ्री आवरण तथा डिजिटलीकरण की प्रक्रिया द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। इस प्रकार स्वर्णाक्षरों में लिखित 'श्री कल्पसूत्र' पांडुलिपि केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जैन कला, लिपिकला, सांस्कृतिक इतिहास एवं आध्यात्मिक परंपरा का जीवंत दस्तावेज है। यह धरोहर वर्धमान ग्रंथागार की विशिष्ट पहचान को और अधिक प्रतिष्ठित करती है।

बाराबुदुर – इस ग्रंथागार की विशेषता इसके दुर्लभ एवं विशिष्ट संग्रह में निहित है। इंडोनेशिया के जावा नगर के मंदिरों से संबंधित "बाराबुदुर" विषयक ग्रंथ को अत्यंत दुर्लभ माना जाता है। इसके लेखक एफ. सी. वॉन ओर्ट और प्रकाशक मार्टिनस निहॉफ हैं। पाँच खंडों में प्रकाशित इस ग्रंथ में लगभग 5000 पृष्ठों में विस्तृत विवरण एवं चित्रात्मक सामग्री संग्रहीत है। जैन विश्व भारती ने 1985 में इसे कोलकाता से क्रय कर ग्रंथागार को प्रदान किया। यह तथ्य

दर्शाता है कि संस्थान केवल धार्मिक साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अध्ययन को भी महत्व देता है।

पट्ट दर्शन – इसी प्रकार यहाँ लगभग 40 फुट लंबा हस्तलिखित 'पट्ट दर्शन' भी सुरक्षित रूप से संरक्षित है, जो अपने आप में एक अद्वितीय सांस्कृतिक धरोहर है। इस विशाल चित्रपट में जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों का चित्रात्मक एवं विवरणात्मक अंकन अत्यंत कलात्मक और सुव्यवस्थित ढंग से किया गया है। प्रत्येक तीर्थंकर की प्रतिमा के साथ उनके जीवन प्रसंग, लक्षण, चिह्न, जन्मस्थान तथा आध्यात्मिक विशेषताओं का संक्षिप्त किंतु सारगर्भित वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह चित्रपट न केवल धार्मिक आस्था और साधना का प्रतीक है, बल्कि भारतीय लघुचित्र परंपरा, हस्तलिपि कला तथा पांडुलिपि–संरक्षण की उत्कृष्ट परंपरा का भी द्योतक है। इसमें प्रयुक्त रंग–संयोजन, रेखांकन की सूक्ष्मता तथा लेखन की शुद्धता तत्कालीन कला–कौशल और शास्त्रीय ज्ञान की गहराई को अभिव्यक्त करती है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह कृति जैन समाज की दार्शनिक परंपरा, नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक आदर्शों के संरक्षण और प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः यह 'पट्ट दर्शन' केवल एक धार्मिक दस्तावेज नहीं, बल्कि कला, इतिहास और संस्कृति का समन्वित एवं अमूल्य साक्ष्य है।

मंत्री मुनि – मंत्री मुनि द्वारा हस्तलिखित ग्रंथों का भंडार संस्थान में मंत्री मुनि द्वारा संकलित लगभग पाँच से छह हजार हस्तलिखित पांडुलिपियों का विशाल भंडार सुरक्षित है। इन पांडुलिपियों का काल 15वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक विस्तृत है, जिससे इनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है। यह संग्रह भारतीय ज्ञान–परंपरा के संरक्षण का अद्वितीय उदाहरण है।

राजस्थानी आख्यान साहित्य – राजस्थानी आख्यान साहित्य जैन धर्म संबंधी आगमिक ग्रंथ, टकसाल (विशिष्ट लेखन शैली), तथा विभिन्न टीकाएँ और व्याख्याएँ सम्मिलित हैं। ये ग्रंथ भाषा–विकास, धार्मिक विचारधारा और सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन के लिए अत्यंत उपयोगी स्रोत सिद्ध होते हैं।

यंत्रराज – संस्थान में सुरक्षित "यंत्रराज" नामक संस्कृत ग्रंथ ज्योतिष विषय पर आधारित है, जिसकी रचना विक्रम संवत् 901 में मानी जाती है। इसमें ज्योतिषीय यंत्रों और उनके प्रयोगों का विस्तृत विवेचन मिलता है। वि.स.1929 में श्यामाचार्य ने 46 पृष्ठो को लिपिबद्ध किया है।

चतुर्विंशति स्तवन – "चतुर्विंशति स्तवन" ग्रंथ चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति से संबंधित है और भक्ति साहित्य की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसको बप्पभट्ट ने इसे 1509 में प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध किया है

मुहूर्त चिंतामणि – ग्रंथ में ज्योतिषीय गणनाओं तथा शुभ–अशुभ समय के निर्धारण का ज्ञान निहित है। इसको 1522 में रामचन्द्र ने संस्कृत में लिपिबद्ध किया है

आचारांग प्रश्न–वृति – जैन आगम पर आधारित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें मुनियों के आचार–विचार, संयम, रहन–सहन और विहार के नियमों का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसको 1595 में पार्श्वचन्द्र ने प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध किया है

ताड़पत्र – श्रीराधा–कृष्ण रासलीला का वर्णन है यह उड़िया भाषा और तमिल भाषा में श्रीमद्भगवत गीता का ताड़पत्र पर अंकित है इसके लिखने तरके व भाषा के आधार पर इसका रचनाकाल 11वी शताब्दी माना गया है

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकालय केवल ज्ञान–संग्रह का स्थान मात्र नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन का सशक्त माध्यम है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक पुस्तकालयों ने ज्ञान–परंपरा को सुरक्षित रखने तथा समाज को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैन विश्व भारती संस्थान का 'वर्धमान ग्रंथागार' इस परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह ग्रंथागार न केवल जैन धर्म, दर्शन एवं तेरापंथ साहित्य का समृद्ध भंडार है, बल्कि यह शोध, अध्ययन एवं वैचारिक संवाद का जीवंत केंद्र भी है। यहाँ संरक्षित हजारों पांडुलिपियाँ, आगम ग्रंथ तथा दुर्लभ हस्तलिखित सामग्री जैन धर्म की प्राचीन ज्ञान–धारा को सुरक्षित रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ग्रंथागार की विशेषता यह है कि यह पारंपरिक ज्ञान–संरक्षण

और आधुनिक तकनीकी साधनों का समन्वय प्रस्तुत करता है। पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण, आधुनिक पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली तथा ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा ज्ञान को व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराना इसकी प्रगतिशील दृष्टि को दर्शाता है। इस प्रकार यह ग्रंथागार अतीत और वर्तमान के मध्य एक सशक्त सेतु का कार्य कर रहा है।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि वर्धमान ग्रंथागार सार्वजनिक, शैक्षिक एवं विशिष्ट तीनों प्रकार के पुस्तकालयों की विशेषताओं को समाहित करता है। यह न केवल विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी है, बल्कि साधु–साध्वियों, विद्वानों तथा सामान्य जन के लिए भी समान रूप से ज्ञान का केंद्र है।

अतः कहा जा सकता है कि वर्धमान ग्रंथागार जैन धर्म की वैचारिक एवं आध्यात्मिक परंपरा के संरक्षण, प्रसार एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह पुस्तकालय विज्ञान और जैन दर्शन के मध्य एक सुदृढ़ सेतु स्थापित करता है तथा पारंपरिक ज्ञान–धरोहर को आधुनिक तकनीक के माध्यम से सुरक्षित एवं सुलभ बनाकर भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने का सार्थक प्रयास कर रहा है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

वर्धमान ग्रंथागार

सुवर्णाक्षरीय श्री कल्पसूत्रम्

हस्तलिखित चित्रपट्ट दर्शन'

दुर्लभ ग्रंथ

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –ब्वततमबजपवदए

1. मेरा जीवन मेरा दर्शन, आचार्य तुलसी. आदर्श साहित्य मंच प्रकाशन. पृ. सं. 318.
2. पुस्तकालय का महत्व, प्रीति पाठक, महावीर एंड संस प्रकाशन. पृ. सं.–02, 65, 69,
3. कामधेनु जैन विश्व भारती का इतिहास, मुनि मोहजीतकुमार, जैन विश्व भारती (2012).
4. आधुनिक पुस्तकालय एवं तकनीकी, सुनिल कुमार, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, पृ.सं. 5,6.
5. https://www.jvbi.ac.in/index.php?option=com_content&view=article&id=434&Itemid=1016
6. https://www.jvbi.ac.in/index.php?option=com_k2&view=item&id=1255
7. https://www.jvbi.ac.in/index.php?option=com_k2&view=item&id=1247